तिथि–10 फरवरी 2020
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२०
युगाब्द-५१२०, अंक-१२३, वर्ष-१३
फाल्गुन विक्रमी २०७६ (फरवरी 2020)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

त्वं हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसि । अप नः शोशुचदघम् ॥ –ऋ०१। ७ । ५। ६॥

व्याख्यान–हे अग्ने परमात्मन्! (त्वं हि) तुम ही (विश्वतः परिभूरसि) सब जगत् में सब ठिकानों में व्याप्त हो। अत एव आप [(विश्वतोमुखः)] विश्वतोमुख हो। हे सर्वतोमुख अग्ने! आप स्वमुख नाम स्वशक्ति से सब जीवों के हृदय में सत्योपदेश नित्य ही कर रहे हो, वही आपका मुख है। हे कृपालो! (अप नः शोशुचदघम्) आप की इच्छा से हमारा पाप सब नष्ट हो जाय। जिससे हम लोग निष्पाप होके आपकी भक्ति और आज्ञापालन में नित्य तत्पर रहें ।

सम्पादकीय

हमारा सनातन धार्म, सनातन कर्तव्य

हमारी सनातन परंपरा में सभी मनुष्यों के लिए दो प्रकार के कर्म सृष्टि के आरंभ से निर्धारित किए गए हैं, १-नित्यकर्म २-नैमित्तिक कर्म। नैमित्तिक कर्म की चर्चा फिर कभी करेंगे, आज हम नित्यकर्म की चर्चा करते हैं। नित्यकर्म जागना-सोना, खाना-पीना, शौच-स्नान यह तो सभी लोग कर ही रहे हैं किन्तु जिन पर हमारी सनातन परंपरा में ऋषि-मुनियों ने सर्वाधिक बल दिया है और कभी भी न छोड़ने का आदेश दिया है वह नित्यकर्म है- सन्ध्या एवं यज्ञ। किन्तु दुर्भाग्यवश दुर्योधन के षड्यंत्रों के फलस्वरूप महाराज युधिष्ठिर के द्यूत खेलने के उपरान्त जो धर्म का ह्रास और अधर्म की खाई गहरी पर गहरी होती गई, परिणामस्वरूप म्लेच्छों की हजार वर्षों की गुलामी और गुलामी का परिणाम-जनता धर्म विमुख होते-होते धर्मस्वरूप नित्यकर्म- सन्ध्या और यज्ञ को भी छोड़ बैठी और यह संसार का नियम है कि जिस-जिस कार्य को मनुष्य छोड़ बैठता है उस-उस कार्य को मूल सहित भूल जाता है, धीरे धीरे स्थिति ऐसी हो जाती है कि उसके भीतर से उस कार्य का, उस विचार का संस्कार भी नष्ट हो जाता है। यही हमारे सनातन धर्म के लोगों के साथ भी हुआ।

हमारे लोगों के भीतर से नित्यकर्म- सन्ध्या एवं यज्ञ के संस्कार भी नष्ट हो गये। एकमात्र अंगुलिगणनीय कुछ ब्राह्मण परिवारों में यह परम्परा बची रही, किन्तु उसमें भी वेदमन्त्रों के स्थान पर पुराणों के श्लोकों और कुछ पुराणों में कहे गए भगवन्नामों का स्मरण जोड़ दिया गया। पुनरपि सन्ध्या यह शब्द बचा रहा। ऋषिवर दयानन्द सरस्वती ने जब वेदविद्या का अवगाहन, अनुसंधान किया तब वेदोक्त नित्यकर्म एवं नैमित्तिक कर्मों का भी सत्यस्वरूप खोजकर प्रकाशित किया और ऐसा करते समय ऋषि ने कहीं भी अपनी विद्वत्ता या कि पांडित्य प्रदर्शन की चेष्टा नहीं की अपितु जो जो वेदोक्त और ऋषि-मुनियों-पूर्वाचार्यों से निर्भ्रम विधान प्राप्त हुए वही विधान किया। जहां-जहां कुछ प्राप्त न हो पाया वहीं शास्त्रोक्त ऊहा के साथ विधान किया। परिणामस्वरूप आज आर्य समाजों में जो सन्ध्या-यज्ञ के विधान हैं वे वर्त्तमान में सर्वाधिक वेदानुकूल हैं और ईश्वरभक्ति के लिए अपरिहार्य भी हैं।

किन्तु ऋषिवर ने जो पुरुषार्थ किया उसे भी हम सभी आर्य कहलाने वाले जन न बढ़ा पाये और न नित्यकर्म के रूप में बचा ही पाए। क्योंकि यह निश्चित सिद्धांत है कि किसी परम्परा को यदि बचाना है तो बढ़ाना होगा, जो परम्परा बढ़ती नहीं वह बचती भी नहीं है। इन सारी परिस्थितियों का अवलोकन करने के उपरान्त 'आर्य महासंघ' के प्रकल्प 'राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा' ने आर्य निर्माण के उपरान्त आर्यों की सतत् अभिवृद्धि के लिए एक और भागीरथ कार्य करने का उपक्रम प्रारंभ किया है और वह उपक्रम है -सहस्रों-लाखों सनातन धर्म पर आरूढ़ आर्य जनों को सन्ध्या और यज्ञ की प्रक्रिया एवं शुद्ध मन्त्रोच्चारण का विधिवत् प्रशिक्षण और वह भी गुरुकुलीय परम्परा के अनुसार गुरुमुखोच्चारणानुच्चारण पुरस्सर।

क्या दिव्य और भव्य आयोजन था कल कैथल, करनाल, पानीपत एवं जीन्द में लगभग दश-दश घंटे सैकड़ों-सैकड़ों आर्य जनों ने पूरी तन्मयता के साथ भयानक कोहरे के होते हुए भी प्रातः आठ बजे से पहुंचना प्रारंभ कर दिया था और रात्रि आठ बजे तक कक्षा में उपस्थित ही नहीं रहे अपितु पूरी सामर्थ्य से सीखते रहे। ५-५ वर्ष के बालकों से लेकर ८० वर्षों के वरिष्ठों तक अद्भुत उत्साहमय वातावरण में सीखने की पूरी जिज्ञासा। आइए! आगामी कक्षाओं में आपका स्वागत है, जो अभी तक नहीं पहुंच पाए हैं, वे अवश्य पहुंचें और बनें 'आर्य पुरोहित' अर्थात् 'आर्य समाज संचालक'। तभी चलेंगे ग्राम-ग्राम और नगर-नगर में 'आर्य समाज'। आर्य महासंघ का लक्ष्य है २०२० में ५०० नये 'आर्य समाजों' की स्थापना। आइए मिलकर ऋषि संकल्प को पूर्ण करने में अपना पूर्ण योगदान दें।

गृहस्थ सम्बन्ध : भाग-७

-आचार्य संजीव आर्य, मु०नगर,

किसी के जीवन में मंगल कब होगा? किसके द्वारा अथवा कैसे होगा? यह नहीं कहा जा सकता क्योंकि इस त्रिगुणात्मक संसार में सुख और दु:ख, मंगल-अमंगल सब मिले-जुले हैं। न कभी विशुद्ध मंगल होता है और न कभी विशुद्ध अमंगल। यह पूर्णत: इस पर निर्भर करता है कि मनुष्य विचार कैसे करता है? उसका दृष्टिकोण क्या है? यदि किसी के विषय में हम सकारात्मक हैं तो हम देखते हैं कि उसके हमारे साथ आने के पश्चात् क्या क्या सकारात्मक हुआ है? और यदि हम नकारात्मक हैं तो देखते हैं कि क्या क्या नकारात्मक हुआ है? इसी पर निर्भर करेगा कि हम किसी के सम्बन्ध में यह धारणा बनावें कि हमारे लिए कौन मंगलकारी है और कौन अमंगलकारी? आर्यों और आर्याओं को नकारात्मक या निराशावादी कभी नहीं होना चाहिए। हम सबके लिए उचित है कि हम घन-घोर निराशा के वातावरण में भी प्रबल आशावादी बने रहें। लेकिन सत्य और वास्तिविकता के धरातल पर ही रहें। यही औचित्य व सन्तुलन का मार्ग है। सनातन संस्कृति के चारों आश्रम मोक्ष मार्ग के लिए ही हैं। अत: गृहस्थ भी इससे भिन्न नहीं हो सकता। वह भी मोक्षमार्ग का साधन ही है। उसमें भी पुण्यार्जन ही करना है। इसी को लक्ष्य रखते हुए वर वधू के मस्तक पर हाथ रख के उपस्थित सम्बन्धियों की ओर देख कर कहता हैं-

सुमंगलिरियं वधूरिमां समेत पश्यत।
सौभाग्यमस्यै दत्वा याथास्तं वि परेतन॥

वधू-वर एक दूसरे के प्रति इतने आस्वत होकर विवाह कर रहे हैं कि समस्त समाज के समक्ष वह कह रहे हैं कि मेरी यह वधू मंगलकारिणी है। इसे आशीर्वाद की दृष्टि से अच्छी प्रकार देख लीजिए और सौभाग्य का आशीर्वाद दीजिए। इसी से शिक्षा लेकर गृहस्थों को एक-दूसरे के सम्बन्ध में सकारात्मक ही रहना चाहिए। अभी वर ने वधू के कारण से अपने जीवन में कोई सकारात्मक या नकारात्क प्रभाव नहीं देखा है। किन्तु फिर भी वह आस्वत है कि मेरी वधू अच्छी प्रकार से मंगल करनेहारी है, यह उदाहरण है।

यह बात मनुष्य स्वभाव के अन्तर्गत ही है कि वह अपने साथी के सम्बन्ध में जानना चाहता है। उसके वर्तमान को तो वह देखता-परखता रहता है किन्तु उसके भूत को जानने को इच्छा भी रखता है। अनेकों गृहस्थों के सम्बन्ध तो इसी कारण से बिखर जाते हैं जब वह किंचित-मात्र एक दूसरे के भूत को जानते है तो उस समय के व्यवहार को जानकर एक दूसरे की निष्ठा में सन्देह उत्पन्न हो जाता है। पुन: सम्बन्ध की चूलें हिल जाती हैं। बसे-बसाये घर उजड़ जाते हैं। आज जब समाज में गुरुकुल की परम्परा नहीं है और यह शिक्षा प्रणाली चल रही है, पाश्चात्य प्रभाव दीर्घतर होता जा रहा है, टीवी पर देश और विदेश के कार्यक्रम सरलता से प्राप्त हो रहे हैं साथ ही सभी के हाथों में आये स्मार्ट फोन ने नव-यौवन को समय से पूर्व ही परिपक्व कर दिया है तब विवाह से पूर्व कुचेष्टाओं और इन्द्रिय दोषों का होना दुर्लभ नहीं है तब गृहस्थ को स्थिर रखने के लिए विवाह की उत्तर विधि में प्रधान-होम की छह आहुतियों का महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है। जिनका भाव यह है कि- हे वधू! तेरे मस्तक भ्रू व मुखाकृति में, केशों में, स्वभाव में, दाँतों में उरुभाग में, गुप्तेन्द्रिय में, जंघाओं में जो भी कोई किसी प्रकार का दोष या पाप रहा हो उसको यहाँ इस यज्ञाग्नि में आहुति करते हुए पूर्णत: समाप्त करता हूँ। अर्थात् जो देखना था, जाचना था या परस्पर एक दूसरे के सम्बन्ध में पता करना था वह विवाह से पूर्व हम कर चुके अब हम जैसे भी हैं एक दूसरे के हैं और इतना ही नहीं हम एक दूसरे के लिए सर्वश्रेष्ठ हैं। तब यह कहकर लड़ने का कोई अन्य कारण नहीं रहा कि आपकी आँखों में, नाक में भौहों आदि में अमुक दोष है। यहाँ तक की यदि किसी का स्वभाव अनुकूल नहीं है तब भी उसका शमन ही करना है, लड़ना नहीं है। स्वभाव को समझकर अनुकूल बनने और बनाने के यत्न से ही समाधान सम्भव है। इससे भी आगे बढ़कर कहा कि-

'यानि-कानि च घोराणि सर्वांगेषु तवा भवन्।'

अर्थात् तेरे किसी अंग से यदि कुछ भी बुरा हुआ है इस आज्याहुति से उसे यहीं छोड़ते है। आगे हमारा गृहस्थ शुद्ध-पवित्र और उच्च होगा। यही भावना हमारे गृहस्थ को स्थिर कर सकती है। अत: सभी गृहस्थों को विशेषत: आर्य गृहस्थों को इन्हीं नियमों का पालन कर गृहस्थ में ध्रुव की भांति स्थिर रहना चाहिए।

ध्रुव के सम्बन्ध में धारणा है कि वह प्रत्येक 25 वर्षों में अपना स्थान बदलता है वैसे ही गृहस्थ को भी उचित व अनुकूल समय पर वानप्रस्थ के लिए तैयार रहने का सन्देश भी यहाँ छिपा हुआ लगता है।

क्रमश: .....

संध्या काल

माघ-मास, शिशिर-ऋतु, कलि-5120, वि. 2076	चैत्र-मास, शिशिर-ऋतु, कलि-5120-21, वि. 2076-77
(10 फरवरी 2020 से 9 मार्च 2020)	(10 मार्च 2020 से 8 अप्रैल 2020)
प्रात: काल: 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 A.M.)	प्रात: काल: 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 A.M.)
सांय काल: 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 P.M.)	सांय काल: 6 बजकर 30 मिनट से (6.30 P.M.)

संविधान की प्रस्तावना

-आचार्य सतीश

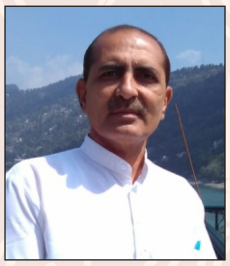

आजकल संविधान पर खूब चर्चा चल रही है। संविधान बचाने की बात हो रही है। लोकतंत्र बचाने की बात हो रही है। इसके लिए संविधान के प्रतीक के रूप में संविधान की प्रस्तावना को जगह-जगह पढ़ा जा रहा है, लोगों को पढ़ाया जा रहा है। प्रस्तावना संविधान की आत्मा होती है, उसकी उद्देशिका कहा जाता है, पूरे संविधान का आधार कहा जाता है प्रस्तावना को, और इसे ही संविधान सभा में सबसे पहले स्वीकार किया गया था। लेकिन इस देश के अधिकांश लोगों को इसका नहीं पता है कि संविधान की जो प्रस्तावना वर्तमान में है और जिसे पड़ा और पढ़ाया जा रहा है वह मूल प्रस्तावना नहीं है। अपितु इसे तो बदला जा चुका है और यह बदलाव भी तब हुआ जब इस देश में आपातकाल लगा हुआ था, जब इस देश में लोकतंत्र बंधक बना हुआ था। सभी लोकतांत्रिक संस्थाएं सरकार की बंधक बनी हुई थी तथा सभी विपक्षी पार्टियों के नेता जेल में बंद थे। लोकतंत्र के चौथे स्तंभ मीडिया पर सरकार का पूर्ण प्रतिबंध था अर्थात् लोकतंत्र जैसी कोई चीज देश में थी ही नहीं। ऐसे समय में लोकतंत्र के आधार स्तंभ संविधान की आत्मा कही जाने वाली प्रस्तावना में ही फेरबदल कर दिया गया, यदि इसे संविधान के साथ छल और धोखा नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे? हमारा यहां पर उद्देश्य आपातकाल या उस समय की सरकार की समीक्षा करना नहीं अपितु वस्तुस्थिति समझ कर जो अनावश्यक कार्य अर्थात् लोकतंत्र की अनुपस्थिति में ही लोकतंत्र के आधार के साथ छेड़छाड़ किया गया उसको जानना है। १६७६ में ४२ वें संशोधन के द्वारा उस समय संविधान में सबसे बड़ा फेरबदल किया गया जिसमें प्रस्तावना के साथ-साथ ५६ स्थानों पर संविधान में बदलाव किया गया। संविधान की प्रस्तावना में पंथनिरपेक्ष समाजवाद शब्दों को जोड़ा गया। इसके अलावा एक स्थान पर और परिवर्तन किया गया संविधान की प्रस्तावना में, लेकिन वह इतना महत्वपूर्ण नहीं है अतः उसकी चर्चा नहीं करते। जहां पहले प्रस्तावना में कहा गया था कि भारत एक संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य है। उसके स्थान पर कहा गया कि भारत एक संप्रभु **समाजवादी पंथनिरपेक्ष** लोकतांत्रिक गणराज्य है।

इन दो शब्दों अर्थात् समाजवाद और सेकुलर जिनको संविधान सभा ने भी चर्चा करके स्वीकार नहीं किया, संविधान की प्रस्तावना में इसे सम्मिलित करना स्वीकार नहीं किया उन्हें इस प्रकार छल से संविधान की प्रस्तावना में सम्मिलित कर दिया गया। यह सब कार्य ही तुष्टीकरण का बहुत बड़ा आधार बना। सेक्यूलर शब्द मुस्लिम तुष्टीकरण के लिए और समाजवाद शब्द जो कि एक विदेशी साम्यवादी विचारधारा है उसे कम्युनिस्टों के तुष्टीकरण के लिए सम्मिलित किया गया। और उसके बाद इस सेक्यूलर शब्द का इतना प्रचलन बढ़ा कि देश का हर वर्ग इसे संविधान की भावना मानते हुए संविधान का उद्देश्य मानते हुए, अपने को सेक्यूलर घोषित करने पर लग गया केवल मुस्लिमों को छोड़कर। जब हमारा लोकतंत्र पहले से ही कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को स्वीकार करता है तो फिर उसमें साम्यवादी समाजवाद की क्या आवश्यकता रहेगी? यह दोनों बाद देश की मूल संस्कृति पर चोट करने वाले हैं। न ही साम्यवादी समाजवाद और न ही पंथनिरपेक्षता में देश की संस्कृति का कोई स्थान है। संविधान की प्रस्तावना में सेक्यूलर और समाजवादी शब्द शामिल होने से देश के हर नागरिक का यह नैतिक कर्त्तव्य बन गया कि वह इसका पालन करें और विभिन्न मतों की परंपराओं को चाहे कितनी ही अनैतिक व मानवता विरोधी हों उनका सम्मान करें उनका विरोध न करें। उदाहरणस्वरूप ईद पर कुर्बानी व हलाला जैसी प्रथा का विरोध नहीं करना है उन्हें सम्मान देना है जब तक उसे कानूनी रूप से अवैध घोषित न कर दिया जाए तब तक उनका भी सम्मान करना है।

यह हर नागरिक का कर्तव्य है संविधान के अनुसार कि अब देश का नागरिक ईसाईयों की चंगाई सभाओं के अंधविश्वास या असम के कामाख्या में भैंसे की बलि का विरोध करेगा तो वह संविधान का विरोधी माना जाएगा क्योंकि संविधान की मूल भावना सेकुलरिज्म अर्थात् किसी भी मत की किसी परंपरा का विरोध करने के विरुद्ध है।

हालांकि १६७७ में ४३ वें संशोधन और १६७८ में ४४ वें संशोधन में तत्कालीन सरकार ने ४२ वें संशोधन के अधिकांश प्रावधानों को बदल दिया। लेकिन दुर्भाग्य यह रहा कि उन्होंने भी धोखे से बदली गई प्रस्तावना को उसके मूल स्वरूप में पुनः स्थापित नहीं किया। इसको ऐसा का ऐसा छोड़ दिया गया क्योंकि किसी ने भी उससे होने वाली हानि का आकलन नहीं किया और आज भी इस धोखाधड़ी के शिकार हो रहे हैं। वर्तमान की सरकार भी इस ओर ध्यान न देकर इसे बदलने को तैयार नहीं दिखती। देश की संस्कृति को हानि पहुंचाने वाले प्रतीकों को जब तक नहीं बदला जाएगा तब तक यह तुष्टीकरण और देश में गृह युद्ध की स्थिति बनी रहेगी। अतः वर्तमान सरकार को चाहिए कि संविधान की प्रस्तावना को उसका मूल स्वरूप प्रदान करे और धोखे से प्रस्तावना में किए गए बदलाव को दूर करें।

आज का प्रश्न

– आचार्य धर्मपाल, कुरुक्षेत्र

प्रश्नः– संन्यास कौन ले सकता है अर्थात् संन्यास का अधिकारी कौन है ?

उत्तरः– संन्यास आज एक विशिष्ट अर्थ में रूढ हो गया है जो चिंतनशील लोगों के मन में चिंता का सहज भाव पैदा करता है। दीर्घकाल से यह शब्द अकर्मण्य लोगों की निष्क्रियता, निठल्लापन, पलायन, परावलंबम और पाखंड का प्रतीक बनकर रह गया है।

संन्यास का वास्तविक अर्थ है सं अर्थात् सम्यक पूर्वक न्यास अर्थात् कर्मों का त्याग (यहां कर्मों के त्याग को सामान्य बुद्धि वालों ने कर्महीनता को मान लिया है)

आइए, कर्मों के त्याग को समझते हैं। संन्यासी एक कर्म की समाप्ति पर अगले कर्म को करने में अपनी बुद्धि और शरीर के बल को लगा लेता है। संन्यासी क्षण मात्र भी फल की प्रतीक्षा में समय नहीं गवाते, तभी वह कर्म में लिप्त नहीं होते।

संन्यास में मन को ऐसे प्रशिक्षित करना होता है कि संन्यासी अपने वश से परे परिस्थितियों से उत्पन्न असफलता में भी समभाव रखता है।

संन्यास अपमान से प्राप्त उद्विग्नता के क्लेश को शांत करने का साधन बनता है।

संन्यास सम्मान से प्राप्त सुख को तुच्छ समझने का आधार बनता है।

संन्यास कर्म की व्यस्तता से उत्पन्न होने वाली वृत्तियों से स्वयं को अलग रखने की युक्ति सुझाता है।

कुछ लोग भावात्मक चोट के कारण स्वयं की विचार शक्ति से भौतिक जगत से मोह तोड़ कर स्वयं और स्वयं के जीवन का कारण तलाशने लगते हैं परंतु अच्छा वही संन्यास है जिनसे ज्ञानपूर्वक सकाम कर्मों का परित्याग किया जा सके।

यदि हम संन्यास में जाना चाहें तो संन्यास से पूर्व हम कर्मों में अलिप्तता का अभ्यास करें अर्थात् कर्म के पश्चात् फल की प्रतीक्षा में समय व्यर्थ में न गवाते हुए अगले कर्म के पुरुषार्थ में लग जावें।

संगठन

- आर्य पथिक रविन्द्र

नमस्ते आर्य बंधुओं,

आज एक और विषय के साथ मैं आपके मध्य आया हूं। सत्र के उपरांत जब एक व्यक्ति आर्य विचारधारा को जानकर और समझकर संगठन से जुड़ता है तो वह संगठन में होने वाले सभी कार्यकलापों और गतिविधियों को देखता है। वह आर्य निर्माण के पवित्र कार्य में सहयोग करके स्वयं को सौभाग्यशाली समझता है। इसके बाद वह विचार करता है कि संगठन के कार्य और भी बेहतर ढंग से किये जा सकते हैं ताकि और अच्छे परिणाम प्राप्त हो सकें। वह व्यवस्थाओं में सुधार की जरूरत महसूस करता है। कभी कभी वांछित परिणाम नहीं आने पर निराश भी होता है। मगर संगठन भी एक रेलगाड़ी की तरह होता है जिसकी अपनी एक निश्चित गति होती है। संगठन पर रास्ते में आने वाली तमाम परेशानियों का सामना करते हुए और सभी को साथ लेकर आगे बढ़ने की जिम्मेदारी होती है।

यहां पर वह व्यक्ति दोराहे पर खड़ा है। करें तो क्या करें? अकेला कुछ करने में असमर्थ महसूस करता है। और संगठन की कार्यप्रणाली और गति से संतुष्ट नहीं। वह देखता है कि इस प्रकार काम करने से कुछ एक पुराने आर्यों में निष्क्रियता की भावना भी आ गई है। ये सब वातावरण उसे परेशान और विचलित करने वाला लगता है।

उस आर्य की तेज गति से काम करने और बेहतर सकारात्मक परिणाम प्राप्त करने की तड़प और भावना सम्मान के योग्य है। यह वो महत्त्वपूर्ण समय है जब एक व्यक्ति को अपनी समस्त शक्तियों को संजोते हुए बिखरने से बचाना है और आगे आने वाली चुनौतियों के लिए खुद को तैयार करना है। आईये जानते हैं कि यह कैसे होगा!

एक आर्य कोई साधारण व्यक्ति तो नहीं होता है। आर्य विचारधारा पर दृढ़ता के साथ चलना सरल नहीं है। एक आर्य को बहुत विरोध और कष्ट का सामना करना पड़ा है। अब या तो फिर वही अनार्यो वाला सरल रास्ता अपनाये या फिर आगे रास्ता रोके खड़ी चुनौतियों का सामना करने के लिए खुद के अन्दर एक योद्धा की खोज करें।

कोई व्यक्ति प्रचारक के रूप में काम करता है, कोई व्यक्ति विद्यालयों में जाकर आर्य विद्या का प्रचार करता है, कोई व्यक्ति आचार्य बनकर विद्या देने का काम करता है तो कोई भजन उपदेशक बनकर जन जागरण का कार्य करता है और कोई घरों में जाकर विवाह संस्कार आदि कराता है। सभी व्यक्तियों में अपनी कुछ एक विशेष योग्यता होती है। अपनी उस योग्यता को पहचान कर उसे निखारने की आवश्यकता है। मैंने छात्र सभा के साथ जुड़कर विद्यालयों में जाकर प्रचार करने का कार्य चुना। खुद को इस कार्य के लिए तैयार किया और एक वर्ष में दिल्ली और हरियाणा के लगभग ३० विद्यालयों में प्रचार किया और एक विशेष पहचान मुझे संगठन में प्राप्त हुई। इस कार्य में मैंने अनेक आर्यों का और अन्यों का भी सहयोग लिया। इसके साथ ही आर्य निर्माण और सर्वहित में भी योगदान देने प्रयास लगातार चलता रहा।

मेरे आर्य बंधुओं इस प्रकार आप खुद को तैयार कर सकते हो और एक सामान्य व्यक्ति से कहीं अधिक बहुत महत्वपूर्ण योगदान संगठन में दे सकते हो। उस समय तुम एक योद्धा की तरह आगे आगे चलोगे और संगठन तुम्हारे साथ और तुम्हारे दिये निर्देशकों को मानकर एक सेना की तरह तुम्हारे पिछे खड़ा होगा। उस समय अपनी सारी ताकत और गति से आगे बढ़ो संगठन उसी गति से आगे बढ़ेगा। एक बार अपनी सारी शक्ति को समेटकर उठ खड़े हो। रास्ते में सारे संसाधन और व्यक्ति अपने आप तुम्हारे पास आएंगे। लगेगा कि उन्हें वर्षों से तुम्हारा ही इंतजार हो। तुम्हारा संघर्ष और विश्वास ही तेरी ताकत है। धन्यवाद!

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

गवर्गण्ड और आस-पास वालों में से किसी ने कुछ भी न पूछा न गाछा। वह विचारा पुकारता ही रहा कि मैं उस साहूकार का नौकर हूँ, परन्तु किसी ने न सुना। झट हुक्म चढ़ा दिया कि इसको शूली पर चढ़ा दो।

शूली लोहे की बरछी और सरों के वृक्ष के समान अणीदार होती है उस पर मनुष्य को चढ़ा उलटा कर नाभि में उसकी अणी लगा देने पार निकल जाने पर वह कुछ विलम्ब से मर जाता है। गवर्गण्ड के नौकर भी उसके सदृश क्यों न हो, क्योंकि **'समान [शील] व्यसनेषु मैत्री'** जिन का स्वभाव एक सा होता है, उन्हीं की परस्पर मित्रता भी होती है। जैसे धर्मात्माओं की धर्मात्माओं, पण्डितों-की-पिण्डतों,दुष्टों और व्यभिचारियों-की-व्यभिचारियों की [दुष्टों और]व्यभिचारियों के साथ मित्रता होती है। न कभी धर्मात्मादि का अधर्मात्मादि, और न अधर्मात्माओं का धर्मात्माओं के साथ मेल हो सकता है।

गवर्गण्ड के सिपाहियों ने विचारा कि-शूली तो [है] मोटी, और मनुष्य है दुबला, अब क्या करना चाहिए? तब राजा के पास जाके सब बात कही। उसपर गवर्गण्ड ने हुक्म दिया कि-" अच्छा तो इसको छोड़ दो, और जो कोई शूली के सदृश, मोटा हो उसको पकड़ के इसके बदले चढ़ा दो।" तब गवर्गण्ड के सिपाहियों ने विचारा कि शूली के सदृश खोजो। तब किसी ने कहा कि-"इस शूली के सदृश तो बगीचे वाले गुरु-चेला दोनों वैरागी ही है।" सब बोले कि-"ठीक-ठीक तो उसका चेला ही है।

जब बहुत से सिपाहियों ने बगीचे में जाके उसके चेले से कहा कि तुमको महाराज का हुक्म है, शूली पर चढ़ने के लिए चल। तब तो यह घबरा के बोला कि-"हमने तो कोई अपराध नहीं किया है।" सिपाही-"अपराध नहीं किया, परन्तु तू ही शूली के समतुल्य है, हम क्या करें?" **साधु**-"क्या, दूसरा कोई नहीं है?"

सिपाही-नहीं, बहुत बर-बर मत कर, चल महाराज का हुक्म है। तब चेला गुरु से बोला कि-महाराज! अब क्या करना चाहिए। **गुरु**-हमने तुझसे प्रथम ही कहा था कि अन्धेर नगरी गवर्गण्ड के राज्य में मुफ्त में माल चाबने को मत चलो, तूने नहीं माना, अब हम क्या करें, जैसे हो वैसा भोग। देख अब सब खाया-पिया निकल जायेगा। **चेला**-अब किसी प्रकार बचाओ, तो यहाँ से दूसरे राज्य में चले जावें। **गुरु**-एक युक्ति है बचने की, सो करो तो बचने का सम्भव है। शूली पर चढ़ते समय तू मुझको हटाना, मैं तुझको हटाऊं। इस प्रकार परस्पर लड़ने से कुछ बचने का उपाय निकल आवेगा। **चेला**-अच्छा तो चलिए। सब बातें दूसरे देश की भाषा में कीं, इससे सिपाही कुछ भी न समझे। सिपाहियों ने कहा-"चलो, देर मत लगाओ, नहीं तो बाँधके ले जाएँगे।" **साधुओं** ने कहा कि-"हम प्रसन्नता पूर्वक चलते हैं, तुम क्यों बाँधो?" **सिपाही**-"अच्छा तो चलो।"

जब शूली के पास पहुँचे तब दोनों लंगोट बाँध के मिट्टी लगाके खूब लड़ने लगे। **गुरु** ने कहा कि-"शूली पर मैं ही चढूँगा।" **चेला**-"चेले का धर्म नहीं कि मेरे रहते हुए गुरु शूली पर चढ़े।" **गुरु**-"मेरा भी धर्म नहीं कि मेरे सामने चेला शूली पर चढ़ जाये। हाँ, मुझको मारकर पीछे भले ही शूली पर चढ़ जाना। क्यों बकता है, चुप रह। समय चला जाता है।" ऐसा कहकर शूली पर चढ़ने लगा तब चेले ने गुरु को पकड़कर धक्का देकर अलग किया [और] आप चढ़ने लगा। फिर गुरु ने भी वैसा ही किया तब तो गवर्गण्ड के सिपाही कामदार सब तमाशा देखते थे। उन्होंने कहा कि तुम शूली पर चढ़ने के लिए क्यों लड़ते हो? तब दोनों साधु बोले कि-'हमसे इस बात को मत पूछो चढ़ने दो। क्योंकि हमको ऐसा समय मिलना दुर्लभ है'

यह बात तो यहाँ ऐसे ही होती रही, उधर गवर्गण्ड के पास खुशामदियों की सभा भरी हुई थी। आप वहाँ से उठ और भोजन करके सिहांसन पर बैठकर सब से बोला कि बैंगन का शाक अत्युत्तम होता है। सुनकर खुशामदी लोग बोले कि धन्य है महाराज की बुद्धि को, बैंगन के शाक को चाखते ही शीघ्र उसकी परीक्षा कर ली। सुनिए महाराज! जब बैंगन अच्छा है तभी तो परमेश्वर ने उसके ऊपर मुकुट, चारों ओर कलगी, ऊपर का वर्ण घनश्याम, भीतर का वर्ण मक्खन के समान बनाया है। ऐसा सुनकर गवर्गण्ड और सभा के लोग अतिप्रसन्न होकर हँसे।

-क्रमशः ....

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट–

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक www.aryanirmatrisabha.com/हिन्दी में पत्रिका पर जाएं।

11 जनवरी–9 फरवरी–2020 **माघ** ऋतु– शिशिर

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
सुभाष जयन्ती 23 जनवरी					पुनर्वसु कृष्ण प्रतिपदा 11 जनवरी	पुष्य कृष्ण द्वितीया 12 जनवरी
आश्लेषा कृष्ण तृतीया 13 जनवरी	मघा/पू॰ फाल्गुनी कृष्ण चतुर्थी 14 जनवरी	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण पंचमी 15 जनवरी	हस्त कृष्ण षष्ठी 16 जनवरी	चित्रा कृष्ण सप्तमी/अष्टमी 17 जनवरी	स्वाती कृष्ण नवमी 18 जनवरी	विशाखा कृष्ण दशमी 19 जनवरी
अनुराधा कृष्ण एकादशी 20 जनवरी	ज्येष्ठा कृष्ण द्वादशी 21 जनवरी	मूल कृष्ण त्रयोदशी 22 जनवरी	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण चतुर्दशी 23 जनवरी	उत्तराषाढ़ा कृष्ण अमावस्या 24 जनवरी	श्रवण कृष्ण प्रतिपदा 25 जनवरी	धनिष्ठा शुक्ल द्वितीया 26 जनवरी
शतभिषा शुक्ल तृतीया 27 जनवरी	शतभिषा शुक्ल तृतीया 28 जनवरी	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल चतुर्थी 29 जनवरी	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल पंचमी 30 जनवरी	रेवती शुक्ल षष्ठी 31 जनवरी	अश्विनी शुक्ल सप्तमी 1 फरवरी	भरणी शुक्ल अष्टमी 2 फरवरी
कृतिका शुक्ल नवमी 3 फरवरी	रोहिणी शुक्ल दशमी 4 फरवरी	मृगशिरा शुक्ल एकादशी 5 फरवरी	आर्द्रा शुक्ल द्वादशी 6 फरवरी	पुनर्वसु शुक्ल त्रयोदशी 7 फरवरी	पुष्य शुक्ल चतुर्दशी 8 फरवरी	आश्लेषा शुक्ल पूर्णिमा 9 फरवरी

10 फरवरी–9 मार्च–2020 **फाल्गुन** ऋतु– वसन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
मघा कृष्ण प्रतिपदा/द्वितीया 10 फरवरी	पू॰ फाल्गुनी कृष्ण तृतीया 11 फरवरी	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण चतुर्थी 12 फरवरी	हस्त कृष्ण पंचमी 13 फरवरी	चित्रा/स्वाती कृष्ण षष्ठी 14 फरवरी	विशाखा कृष्ण सप्तमी 15 फरवरी	अनुराधा कृष्ण अष्टमी 16 फरवरी
ज्येष्ठा कृष्ण नवमी 17 फरवरी	मूल कृष्ण दशमी 18 फरवरी	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण एकादशी 19 फरवरी	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण द्वादशी 20 फरवरी	उत्तराषाढ़ा कृष्ण त्रयोदशी 21 फरवरी	श्रवण कृष्ण चतुर्दशी 22 फरवरी	धनिष्ठा कृष्ण अमावस्या 23 फरवरी
शतभिषा शुक्ल प्रतिपदा 24 फरवरी	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल द्वितीया 25 फरवरी	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल तृतीया 26 फरवरी	रेवती शुक्ल चतुर्थी 27 फरवरी	अश्विनी शुक्ल पंचमी 28 फरवरी	भरणी शुक्ल पंचमी 29 फरवरी	कृतिका शुक्ल षष्ठी 1 मार्च
कृतिका शुक्ल सप्तमी 2 मार्च	रोहिणी शुक्ल अष्टमी 3 मार्च	मृगशिरा शुक्ल नवमी 4 मार्च	आर्द्रा शुक्ल दशमी 5 मार्च	पुनर्वसु शुक्ल एकादशी 6 मार्च	पुष्य शुक्ल द्वादशी/त्रयोदशी 7 मार्च	आश्लेषा/मघा शुक्ल चतुर्दशी 8 मार्च
पू॰ फाल्गुनी शुक्ल पूर्णिमा 9 मार्च						

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

" A lion in the company of a bitch! It is no wonder that such associations should result in the birth of dogs. To what depths have Vedic traditions been lowered? What a sorry spectacle!"

The Maharaja stood dumbfound, and received this rebuke in silence.The Swami, retraced his steps to his Kothi. In the course of his talks thereafter, he would often remark, "If the Hindu States have not yet been wiped out of existence, it is on account of the purity of Hindu queens. The debauchery of the rulers and the nobles would long have brought about their ruin."

The rebuke which Swamiji had administered to the Maharaja had its affect. He was remorseful, but his remorse meant Nanhi Jan's loss of prestige and position It meant the liberation of a victim from her snare. This 'devil of s fakir,' had come to jeopardise her interests to stand between her and her lover or more properly, her slave. He should know what the wrath of a wounded woman could do.

Shortly after, Swamiji addressed the following letter to Maharaja Pratap Singh:-

Honored and Valiant Maharaja Shri Pratap Singh, unto you be peace.

(This letter may be shown to Baba sahib also)

I have been deeply grieved to find that the ruler of Jodhpur is a lazy man, and that you and Baba Sahib both possess diseased constitutions. You know very well that the welfare of more than sixteen lakhs of people who inhabit this state depends on you three. And yet, you do not pay any heed to the preservation of your health and manliness. How deplorable!

I wish you to listen to me and to improve your daily routine in the light of what I say. If you reform your selves, you may be able to do good not only to Marwar, but the entire Aryavarta. Competent men like you are not born every day in the world. Unless you attend to what I advise you to do, you can never reform and elevate the land. The longer people like you continue to live, the more useful they prove to the country. It behooves you to think of all this. But, of course' you are at liberty to do as you choose.

What noble patriotism does this latter be-speak! Every line is full of solicitude for the good of the people. But one man's meat is another man's poison. Nanhi Jan read in this letter her doom-a life of wretchedness and misery. She must have revenge at any cost. Her resolve was made. There was no dearth of accomplices to render her all possible help in carrying out her mean object.

The last voyage

It was the 29th of September. The Swami retired to rest after taking his usual draught of milk. He had not slept much when he woke with a violent pain in his stomach and feeling to vomit. He threw up matter thrice and the pain abating a little,

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

सत्र का अनुभव बहुत अच्छा रहा। मुझे इस बात का अफसोस रहेगा कि यह सत्र मैंने 20 साल पहले क्यों नहीं किया। इस सत्र से हमें यह जानकारी मिली कि हम कितने अंधकार में जी रहे थे। मुझे ज्ञान रूपी प्रकाश मिला है और यह भी जाना कि आज भी हम कितने डर में जी रहे हैं। यहाँ आकर हमारा डर भी खत्म हुआ। जो मैंने आर्य समाज के बारे में सुना था यहाँ आकर उससे ज्यादा जाना। यह दो दिन का सत्र मुझे पूरी जिन्दगी प्रभावित करेगा।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के लिए में बहुत कुछ करूंगा। आर्य की शिक्षा जन-जन तक पहुचाने की कोशिश करूंगा और मेरे बच्चे को भी 12 वर्ष की आयु तक आर्य की शिक्षा प्रदान करवाऊगां।

नाम : विकास धीमान, आयु : 38 वर्ष, योग्यता : एम.बी.ए., कार्यः प्राईवेट जॉब, पता : कैथल, हरियाणा।

मुझे इस सत्र को सुनकर बहुत अच्छा लगा। मुझे इस सत्र में ईश्वर के अस्तिव के बारे में बहुत अच्छी जानकारी मिली। इस सत्र में मुझे आर्यो के गौरवपूर्ण इतिहास के बारे में जानकारी मिली। इस सत्र मैं मैंने उपासना करने का सही तरीका जाना है। इस प्रकार के सत्र हमारे देश को आगे बढ़ाने के लिए बहुत ही जरूरी हैं।

नाम : सुरक्षा, आयु : 25 वर्ष, योग्यता : स्नातक, कार्यः शिक्षक, पता : हिसार, हरियाणा।

मेरा अनुभव इस सत्र में बहुत अच्छा रहा। जिन विषयों को मैंने अब से पहले कभी सोचा भी नहीं था ऐसे विषयों पर न सिर्फ प्रकाश डाला गया बल्कि उनकी शंकाओं के समाधान भी बडे धैर्य पूर्वक किए गए। अष्टांग योग जैसे विषय आचार्य जी ने बड़े ही सरल शब्दों में समझाए। इसके अलावा राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका के बारे में प्रकाश डाला गया। वर्तमान में राष्ट्र की समस्याओं के बारे में अवगत करवाया गया। इस सत्र में मिले अनुभव से मैं आर्य बनूंगा, यही मेरा सहयोग होगा और बनाऊंगा।

नाम : रोहन, आयु : 22 वर्ष, योग्यता : 12, कार्यः शास्त्री, पता : जीन्द, हरियाणा।

मुझे सत्र से बहुत अधिक सीखने को मिला। मेरे पूर्वजों के बारे में जो मुझे पता नहीं था उनके बारे में बहुत अधिक सीखा है। लम्बे समय से भिन्न आइम्बरों को मैं मानता था। उनके बारे में विस्तार से जाना है।

मैं अब अपना व मेरे सर्म्पक में जो भी आएगा मैं उसे अपने आधीन इतिहास के बारे में बताऊंगा। उसे आर्य/आर्या बनाने में पूर्ण सहयोग करूंगा। समाज में जो कुरूतियाँ फैली हैं उन्हें दूर करूंगा।

नाम : गोविन्द, आयु : 29 वर्ष, योग्यता : एम.एस.सी, कार्यः प्राईवेज जॉब, पता : कैथल, हरियाणा।

अविस्मरणीय एवं ज्ञानोपदेशक सत्र रहा। अतीत की भूलों को छोड़कर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। बाहय आडम्बरों एवं ऊंच-नीच, जाति-पाति के बन्धनों को तोड़कर आपसी मेल जोल एवं भाईचारे की भावना विकसित करने के लिए प्रेरित किया गया। व्यक्ति की स्वयं की पहचान, ईश्वर क्या है? एवं धर्म की पूर्ण व्याख्या समझाई गई। आगे भी इस तरह के सत्रों में भाग लेने की जागृति एवं अभिलाषा पैदा हुई।

नाम : कर्णसिंह, आयु : 43 वर्ष, योग्यता : पी.एल.बी., कार्यः अध्यापन, पता : पानीपत, हरियाणा।

आचार्य जी यह सत्र सुन कर हमारे अन्दर का जो अन्धविश्वास, अज्ञानता थी हमें उसकी और उसके बारे में पता चला और हमारे जीवन के लक्ष्य का बोध हुआ। हमें केवल हमारे बनाने वाले उस ईश्वर की आराधना करनी चाहिए जो चेतन है और सर्वव्यापक है। हमें हमारे जीवन में हमेशा कर्मयोगी अर्थात् पुरुषार्थी होना चाहिए। हमें अपने जीवन की समस्याओं का हल वेद में ढुंढ़ना चाहिए और उसकी प्रेरणा का अनुसरण करना चाहिए। हमे हर विचार को बुद्धि व तर्क पर विचार करके उसे अपनी जीवनशैली में अपनाना चाहिए। हमें अपनी संस्कृति और वैदिक धर्म की सुरक्षा के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

नाम : रणवीर कुमार, आयु : 33 वर्ष, योग्यता : आई.टी.आई., कार्यः लाईन मैन, पता : पानीपत, हरियाणा।

यहाँ पर आकर मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि यहाँ पर हमें अनेकों अच्छी-अच्छी आदतों, कार्यो के बारे में बताया गया जो हमें अपने प्रतिदिन की आदतों में जोड़नी चाहिए। यहाँ पर मुझे आर्य के कर्त्तव्यों के बारे में भी बताया गया तथा हमें हमारे देश से आर्यो की घट रही संख्या तथा उनके ज्ञान, आहार, व्यवहार, आचार आदि के बारे में भी बताया गया। मैं आज से ही इन आदतों, आचारों, व्यवहारों को अपनाने का संकल्प लेता हूँ।

नाम : मन्दीप, आयु : 18 वर्ष, योग्यता : 8, कार्यः विद्यार्थी, पता : हिसार, हरियाणा।

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	09 फरवरी	दिन-रविवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-आश्लेषा
अमावस्या	23 फरवरी	दिन-रविवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-धनिष्ठा
पूर्णिमा	09 मार्च	दिन-सोमवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-पू०फाल्गुनी
अमावस्या	24 मार्च	दिन-मंगलवार	मास-चैत्र	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-उ०भाद्रपदा

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।